

lR; opu

ikxke u- 323

: r & iLrkouk] 1%1 &16

: r dh iLr d

ÁLrkouk

इस पुस्तक में रूत नामक एक अन्यजाति बालिका की कहानी है जो मोआब की मूर्तिपूजक पृष्ठभूमि से थी। मोआबी अनेक क्षेत्रों में बहिष्कृत माने जाते थे। रूत इस्राएल के परमेश्वर में विश्वास करने लगी थी, जैसा कि अध्याय 2:12 पद में बोअज़ ने कहा, “इस्राएल के परमेश्वर यहोवा जिसके पंखों तले तू शरण लेने आई है तुझे पूरा बदला दे।”

रूत की पुस्तक में केवल चार अध्याय हैं परन्तु यह बौना अध्याय बहुत बड़ा सन्देश रखता है। सच तो यह है कि इसमें अनेक सन्देश हैं। यह मसीह यीशु की वंशावली भी प्रकट करती है, और दाऊद के वंश से उसका आगमन भी दर्शाती है। कुछ टीकाकारों का कहना है कि रूत की पुस्तक का मुख्य उद्देश्य वंशावली दर्शाना है। मैं यह तो मानता हूँ कि यह एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है परन्तु यह नहीं मानता की यही मुख्य उद्देश्य है। कील और डेलिटज़ का कहना है, “4:17 के अन्तिम शब्द, “यिशै का पिता और दाऊद का दादा वही हुआ।” यह शब्द लेखक द्वारा इन घटनाओं के लिखने का उद्देश्य प्रकट करते हैं। यह अनुमान आगे दी गई वंशावली द्वारा पुष्ट किया जाता है, जिससे पुस्तक का अन्त होता है।

रूत की पुस्तक संसार में यीशु के आगमन के सम्बन्ध में अत्यधिक महत्व रखती है। इस पुस्तक के बिना हम दाऊद के परिवार को यहूदा के गोत्र के साथ नहीं जोड़ पाएँगे। उत्पत्ति से बैतलहम की चरनी और क्रूस और राजमुकुट और भविष्य में दाऊद के सिंहासन पर प्रभु का बैठाना आदि कड़ियों को जोड़ने में यह पुस्तक एक महत्वपूर्ण कड़ी है। यह एक निश्चित कारण है कि रूत की पुस्तक को बाइबल में रखा गया है।

तथापि रूत की पुस्तक का मुख्य उद्देश्य है उद्धार की शिक्षा के एक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत करे। उद्धार एक कुटुम्बी मुक्तिदाता के द्वारा ही सम्भव है। परमेश्वर एक मध्यस्थ के बिना उद्धार का कार्य नहीं कर सकता था। क्योंकि परमेश्वर ही उद्धार कर सकता था, अतः उसे मानव बनना पड़ा। बोअज़ कुटुम्बी मुक्तिदाता का उदाहरण है। यह मेल के विचार में अति महत्वपूर्ण है। रूत की पुस्तक हमारे स्तर पर एक प्रेमी दम्पति के प्रेम की गाथा सुनाती है। वे साधारण मनुष्य हैं परन्तु उनकी प्रेम कथा में हम उद्धारकर्ता के दिव्य प्रेम को देख सकते हैं जो उसने आप से और मुझ से किया। रूत की पुस्तक में हम इस प्रेम कथा को अनावृत होते देखते हैं।

v/;k; 1

fo" k; % मोआब देश में

: r 1%1 में हम पढ़ते हैं—

*“जिन दिनों में न्यायी लोग न्याय करते थे उन दिनों में देश में
अकाल पड़ा, तब यहूदा के बैतलहम का एक पुरुष अपनी स्त्री और
दोनों पुत्रों को संग लेकर मोआब के देश में परदेशी होकर रहने
के लिये चला।”*

रुत की पुस्तक का यह आरम्भिक पद जानकारी का भण्डार है। यह एक प्रकार से समाचार पत्र का संवाद है। कॉलेज के दिनों में मैं एक समाचार पत्र में संवाददाता का काम कर रहा था। मेरा परिचय नगर संपादक से भी हुआ। वह एक भला व्यक्ति था और मेरी यथासम्भव सहायता के लिए तत्पर रहता था। मैं ने शहर में घटी एक घटना का वर्णन लिख कर उस संपादक को दिया। उसने उसे पढ़कर अस्वीकार कर दिया। उसने कहा कि वह उसे नहीं छाप सकता। उसने मुझे बताया कि दो बातें प्रथम वाक्य में अत्यधिक महत्व रखती हैं कि लेख को समाचार योग्य बनाया जाए — समय और स्थान। उसने वास्तव में यह कहा कि पहले वाक्य में अधिक से अधिक कहने का प्रयास कीजिए। अब जब आप समाचार पत्र पढ़ें तो किसी भी मुख्य समाचार के प्रथम वाक्य का विश्लेषण करके देखें कि उसमें कितनी अधिक महत्वपूर्ण जानकारियाँ हैं। कभी-कभी तो प्रथम वाक्य पूरा एक गद्यांश ही होता है और सम्पूर्ण कहानी सुना देता है। उसमें घटना, घटनास्थल और घटना का होना दर्शाता है।

परमेश्वर का पवित्र आत्मा एक महान संवाददाता है। अतः इस पहले पद में वह समय और स्थान का उल्लेख करता है। समय वह था जब इस्राएल में न्यायी होते थे। वह अन्धकार का युग था। एक प्रकार से वह युग इस्राएल के इतिहास का सबसे अधिक अन्धकारमय युग था। आपको स्मरण होगा कि इस्राएल मिस्र देश में दास था और परमेश्वर ने उन्हें लहू और सामर्थ्य द्वारा मुक्त करा कर जंगल से लेकर प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश कराया और उन्हें उज्ज्वल भविष्य की प्रतिज्ञा दी। आप सोचते होंगे कि उनके पूर्वजों ने मिस्र में तो दासत्व का कष्ट भोगा था,

उससे मुक्ति पाने के कारण वे परमेश्वर की अति उत्तम सेवा करेंगे परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया।

यदि आप किसी देश में आमूल सुधार देखना चाहते हैं तो जागृति के लिए प्रार्थना न करें वरन् यह प्रार्थना करें कि परमेश्वर कलीसिया को अग्नि परीक्षा से ले चले। यह मेरी गारन्टी है कि आमूल परिवर्तन आएगा। पूर्वकाल में परमेश्वर की प्रजा के साथ ऐसा ही हुआ और इस्राएल में भी ऐसा ही हुआ। जब जब वे परमेश्वर से दूर हुए तब तब परमेश्वर ने उन्हें दण्ड स्वरूप या तो किसी बैरी के अधीन कर दिया या बैरियों से पराजित करवाया। जब उन पर कष्ट आए तब उन्होंने परमेश्वर को पुकारा और परमेश्वर अनुग्रहकारी हुआ। उसने सदा ही एक न्यायी तैयार किया कि उन्हें मुक्ति दिलाए।

रुत की पुस्तक न्यायियों के युग की है। इसमें व्यक्त घटनाएँ न्यायियों के युग की इस अन्धकारमय पृष्ठभूमि की हैं। वह समय जब शिमशोन जैसा मनुष्य जनमान्य था। आज जब लोकापवाद हमारे राष्ट्र को दहला देते हैं तब शिमशोन के अपवाद को स्मरण करें। समझौते, भ्रष्टाचार और अव्यवस्था के इस युग में यह घट रही है। यह अन्धकार में ज्योति है। परमेश्वर ऐसे ही लिखता है। नहीं क्या? उसने उद्धार की कहानी भी पाप के अन्धकार में लिखी थी। उसने यह आकर्षक छोटी कहानी न्यायियों के अन्धकारमय युग की पृष्ठभूमि में लिखी थी। हमारे सामने यही परिदृश्य है, “जिन दिनों में न्यायी लोग न्याय करते थे...”

यही नहीं, वहाँ यह भी लिखा है कि स्थान था, बैतलहम—यहूदा। यह वास्तव में अति रुचिकर है क्योंकि आज परमेश्वर की सन्तान के लिए बैतलहम—यहूदा अत्यधिक अर्थपूर्ण है। सच कहूँ तो मसीह यीशु का जन्म यहूदा के बैतलहम में कभी नहीं होता यदि रुत की पुस्तक में व्यक्त घटनाएँ बैतलहम में घटित नहीं होतीं। सदा स्मरण रखें कि बड़े दिन की कहानी रुत की पुस्तक की घटनाओं के साथ ही उस समय आरम्भ हुई थी। ये घटनाएँ हम पर प्रभाव डालेंगी जब हम रुत की कहानी धर्मशास्त्र में पढ़ेंगे।

यहूदा के बैतलहम का अर्थ बड़ा ही रोचक है। सच तो यह है कि बाइबल में प्रत्येक नाम का एक अर्थ है। बैतलहम का अर्थ है, “रोटी का घर” और यहूदा का अर्थ है, “स्तुति।” यह रहने के लिए कैसा मनोहर स्थान है — रोटी और स्तुति का घर! रुत की कहानी का आरम्भ और अन्त यहीं है और इसी स्थान में यीशु का जन्म हुआ था। अब क्योंकि बाइबल और विशेष करके पुराने नियम में नामों का विशेष महत्व होता था, इसलिये यदि हम नामों का अनुवाद न करें तो

बहुत सी जानकारियों से वंचित रह जाएँगे। कुछ बाइबल संस्करणों में नामों का अर्थ नीचे टिप्पणियों में दिया जाता है। इसके द्वारा परमेश्वर के वचन में अर्थ का भण्डार जुड़ जाता है जैसा कि यहाँ है। “यहूदा के बैतलहम का एक पुरुष अपनी स्त्री और दोनों पुत्रों को संग लेकर मोआब के देश में परदेशी होकर रहने के लिये चला।” वह रोटी और स्तुति के घर में रहता था परन्तु उसने मोआब में आप्रवास किया। परमेश्वर के वचन में मोआब के बारे में बड़ी रोचक बात पाई जाती है वरन् हास्यजनक है। भजन 108 के पद 9 में लिखा है, “मोआब मेरे धोने का पात्र है,” मोआब के बारे में यह परमेश्वर का वचन है। ये लोग बहिष्कृत जन थे। उनका आरम्भ बड़ा ही शोचनीय और घृणित रहा था और परमेश्वर के वचन में मोआब का कोई मान नहीं है। यदि दूसरे शब्दों में कहा जाए तो परमेश्वर कहता है कि मोआब उसका कूड़ादान है।

अब एक पल इस विवरण पर विचार कीजिए। यहाँ एक परिवार है— पति, पत्नी, और दो पुत्र, वे मोआब में जाते हैं। वे रोटी और स्तुति के घर को त्याग कर कूड़ादान में भोजन खोजने जाते हैं। क्या आपने पहले कभी ऐसी कहानी सुनी है? मुझे पूरा विश्वास है कि आपको प्रभु यीशु मसीह का उड़ाऊ पुत्र वाला दृष्टान्त स्मरण आ गया होगा। उसने अपने पिता की समृद्धि को त्याग दिया और परदेश चला गया था। वहाँ वह सूअरों के चारे से अपना पेट भरने की लालसा करने लगा। मेरे विचार में मसीह यीशु ने इस दृष्टान्त में कल्पना नहीं की थी और सच तो यह कि उसके दृष्टान्त काल्पनिक नहीं थे। उसका प्रत्येक दृष्टान्त सत्य घटना होता था। मेरे विचार में उसका यह दृष्टान्त अनेक पुत्रों के लिए प्रासंगिक था। उस दिन से आज तक यह दृष्टान्त लाखों जीवनों में दोहराया जा चुका है। मैं ने कुछ समय पूर्व ही एक युवक से बात की जो अपने घर से भाग आया था। उसकी कहानी ठीक उड़ाऊ पुत्र की थी। उसने मसीह को ग्रहण किया और हमने उसके पिता को सूचना देकर बुलाया। वह अति प्रसन्न था। यह कहानी मेरे मित्रों, अनेक पुत्रों की वास्तविकता है।

अब यहाँ एक उड़ाऊ परिवार की कहानी है। जब देश में अकाल पड़ा तब वे चले गए थे। वे डर गए थे उनका पिता अब्राहम एक बार अकाल से डर कर मिस्र चला गया था। इस समय भी अकाल पड़ा था। यह अकाल उन तरह अकालों में से एक है जिनका बाइबल में उल्लेख किया गया है। बाइबल में जब जब अकाल पड़ा तब तब वह परमेश्वर का दण्ड माना गया था। यह समय न्यायियों का अन्धकार युग ही नहीं वरन् अन्धकार युग का भी अन्धकार का समय था जब यह घटना घटी थी। उन्होंने विश्वास नहीं किया कि परमेश्वर रोटी और स्तुति के घर में उनकी सुधि लेने में सक्षम है। अतः वे मोआब देश में चले गए।

मैं चाहता हूँ कि आपका परिचय इस परिवार से करवाया जाए।

: r 1%2 में हम पढ़ते हैं,

“उस पुरुष का नाम एलीमेलेक, और उसकी पत्नी का नाम नाओमी, और उसके दो बेटों के नाम महलोन और किल्योन थे; ये एप्राती थे अर्थात् यहूदा के बैतलहम के रहनेवाले थे। वे मोआब के देश में आकर वहाँ रहे।”

उस पुरुष का नाम एलीमेलेक था। उसके नाम का अर्थ है, “मेरा परमेश्वर राजा है” या “राजा मेरा परमेश्वर है।” इस पुरुष का नाम वास्तव में अर्थपूर्ण है। उस पुरुष की गवाही पर ध्यान दीजिए। वह जहाँ भी काम करता होगा वे उसे अपनी भाषा में एलीमेलेक पुकारते होंगे अर्थात् मेरा परमेश्वर राजा है या परमेश्वर मेरा राजा है। यह वास्तव में एक अद्भुत नाम है। नहीं है क्या? उसका नाम ही एक गवाही है और यह नाम रखकर मोआब चले जाना तो वास्तव में बहुत बुरी बात थी। उसके व्यवहार से प्रगट नहीं हुआ कि परमेश्वर उसका राजा है।

उसकी पत्नी का नाम नाओमी था जिसका अर्थ है “सुहाना।” मैं उसे एक अच्छा अनुवाद देना चाहता हूँ – प्रफुल्ल सूर्यज्योति। वह एक बहुत अच्छी महिला थी। वह एक ऐसी स्त्री थी जो जीवन के प्रति प्रसन्नता का दृष्टिकोण रखती थी। आज ऐसे स्वभाव के अनेक विश्वासी हैं। वे सदैव जीवन के ज्योतिर्मय पक्ष को देखते हैं। वे परिस्थितियों से ऊपर उठकर जीते हैं न कि परिस्थितियों से दब कर। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो सदैव शिकायत करते रहते हैं, दोष देखते हैं परन्तु नाओमी ऐसी नहीं थी। प्रफुल्ल सूर्यज्योति ऐसी नहीं थी।

एलीमेलेक और नाओमी के दो पुत्र थे। उनके नाम महलोन और किल्योन थे। महलोन का अर्थ है, अस्वस्थ और किल्योन का अर्थ है, छोटा। नाओमी के दोनों पुत्र दुर्बल थे। इस कारण मैं सोचता हूँ कि बैतलहम में नाओमी की अच्छी गवाही रही होगी। लोग प्रायः यही कहते होंगे कि ऐसे दो दुर्बल पुत्रों का बोझ सम्भालने के उपरान्त भी प्रफुल्ल सूर्यज्योति कैसे प्रसन्नचित्त दिखाई देती है। परन्तु यही उसकी कहानी है। हमें उनके बारे में यह बताया गया है कि वे यहूदा के बैतलहमवासी एप्राती थे।

वे मोआब देश में गए और वहीं बस गए। अर्थात् उन्होंने वहाँ अपना घर बना लिया। अब उड़ाऊ पुत्र यद्यपि सूअरों के मध्य था, उसने सोचा – लूका 15:18 – “मैं अपने पिता के पास जाऊँगा।” कभी-कभी उड़ाऊ पुत्र बहुत लम्बे समय तक सूअरों के बाड़े में ही रहते हैं। इसी

प्रकार यह परिवार भी दुर्भाग्य से लम्बे समय तक वहाँ रहा। क्या आप जानते हैं कि एक मसीही परिवार या परमेश्वर की सन्तान के साथ क्या होता है – जब वे दूर देश को चले जाते हैं? उस देश में उनकी ताड़ना होती है। उड़ाऊ पुत्र जब लौट कर घर आया तब उसका पिता कह सकता था, “मेरा कोड़ा लाओ, मैं इसकी चमड़ी उधेड़ दूँगा। मेरा पैसा लेकर भाग गया और मेरा नाम बदनाम किया। सब पैसा फूँक दिया। मैं इसे सबक सिखाऊँगा।” उसने ऐसा नहीं किया। उसने अपने पुत्र को गले लगाया। उसने अपने सेवकों को आदेश दिया कि वे एक मोटा बछड़ा काटें और उसके लिए सबसे अच्छा वस्त्र लाएँ। अनेक विश्वासी सोचते हैं कि परमेश्वर कठोर और निर्दय पिता है। यदि हम उसके पास लौट आएँगे तो वह हमारा स्वागत नहीं करेगा। वह हमारी ताड़ना करेगा। मेरे मित्रों, वह आप पर कोड़े नहीं बरसाएगा। कोड़े तो आपको परदेश में खाने पड़ेंगे। उड़ाऊ पुत्र को परदेश में ही मार खाना पड़ी थी और उसे अच्छी मार पड़ी। यह परिवार भी परदेश में मार खाएगा।

परन्तु वे एक अच्छा परिवार हैं – “मेरा परमेश्वर राजा है।” वह पिता है, परिवार का सिर है। और प्रफुल्ल सूर्यज्योति माता है, एक पत्नी है तथा दो दुर्बल पुत्र – महलोन और किल्योन। वे मोआब गए। वे कूड़ेदान में भोजन खोजने गए और वहाँ बस गए। अब देखिए आगे क्या होता है।

: r 1३ में हम पढ़ते हैं –

***“और नाओमी का पति एलीमेलेक मर गया, और नाओमी
और उसके दोनों पुत्र रह गए।”***

मैं ने तो आपसे कहा था कि परदेश में वे कष्ट उठाएँगे। ऐसा ही होता है। उन पर कष्ट आए। १ यूहन्ना अध्याय ५ पद १६ में यूहन्ना कहता है, “पाप... जिसका फल मृत्यु न हो...” मैं नहीं जानता कि आपके लिए मृत्यु लानेवाला पाप कौन सा है? हनन्याह और सफीरा का मृत्युदायक पाप था – पवित्र आत्मा से झूठ बोलना। मेरे विचार में आज यह मृत्युदायक पाप नहीं है। यदि ऐसा होता तो आज पासबानों को दफ़न करने से राहत नहीं मिलती। मेरे विचारों में प्रत्येक विश्वासी के साथ ऐसा नहीं है। आप परमेश्वर से दूर हाते हैं तो समस्या आती है।

नाओमी के पति की मृत्यु हो गई। अब देखिए उसके बाद क्या हुआ।

: r 1४ में हम पढ़ते हैं,

*“और उन्होंने एक-एक मोआबिन स्त्री से विवाह कर लिया;
एक का नाम ओर्पा और दूसरी का नाम रूत था। फिर वे
वहाँ कोई दस वर्ष रहे।”*

उन्होंने विवाह करके मूसा की व्यवस्था का उल्लंघन किया। परमेश्वर की संगति से दूर होना, दूर देश जाना ईश्वरत्याग की ओर बढ़ता है — पाप में बढ़ना और वृद्धिमान होना। उन्होंने यही किया। उन्होंने मूसा की व्यवस्था का उल्लंघन करके मोआबी स्त्रियों से विवाह किया।

ओर्पा का अर्थ है, हिरन। इससे प्रतीत होता है कि वह एक खिलाड़ी जैसा शरीर रखती थी। अब आप आश्चर्य करते होंगे कि ऐसी फुर्तीली स्त्री ने एक दुर्बल युवक से विवाह क्यों किया। परन्तु उसने विवाह किया। अब इसके बाद हम उस स्त्री के विषय में देखेंगे जो हमारे ध्यान का केन्द्र है। रूत का अर्थ है, सौंदर्य अर्थात् आकर्षक व्यक्तित्व। यह उसका गुण था। वह सुन्दर थी परन्तु मूर्ख नहीं थी। वह एक असाधारण व्यक्तित्व की महिला थी और मुझे पूरा विश्वास है कि आप उसे देखकर अवश्य प्रेम करने लगेंगे क्योंकि वह हमारे प्रभु यीशु मसीह के पूर्वजों में है। दूसरों शब्दों में मानव यीशु की नसों में रूत का लहू दौड़ रहा था। हम अब उससे परिचय प्राप्त करेंगे। उसने मोआब में महलोन से विवाह किया। मैं उसके वर्णन में एक शब्द काम में लेना चाहता हूँ जिसे सिनेमा ने गलत अर्थ दे दिया है। निश्चय ही रूत मोहनी थी। उसने उस दुर्बल युवक से क्यों विवाह किया? यह समझना अभी कठिन है परन्तु हम आगे चलकर इसे समझ पाएँगे।

अब इस उड़ाऊ परिवार पर इस दूर देश में समस्या आ गई और नाओमी और रूत पर अभी और भी समस्याएँ आएँगी। नाओमी का पति मर गया और पुत्रों ने मोआबी स्त्रियों से विवाह किया।

: r 1%5 में हम पढ़ते हैं,

*“जब महलोन और किल्योन दोनों मर गए, तब नाओमी
अपने दोनों पुत्रों और पति से रहित हो गई।”*

मैं सोच भी यही रहा था कि वे अगली ठण्ड आने तक बच पाएँगे और यही हुआ कि वे मर गए क्योंकि वे दुर्बल थे। नाओमी का पूरा परिवार समाप्त हो गया था। उसके पास अब जो रह गया था वह उसकी परदेशी युवा बहूएँ थीं। मैं कहता हूँ, समस्या निश्चय ही आई। इस परिवार को भी उड़ाऊ पुत्र के समान परदेश में मार पड़ी।

: r 1%6 में हम पढ़ते हैं,

“तब वह मोआब के देश में यह सुनकर कि यहोवा ने अपनी प्रजा के लोगों की सुधि ले के उन्हें भोजनवस्तु दी है, उस देश से अपनी दोनों बहुओं समेत लौट जाने को चली।”

प्रतिज्ञा के देश में अब अकाल समाप्त हो गया था और बैतलहम में फिर से स्तुति और रोटी का प्रबन्ध हो गया था। अब नाओमी स्वदेश लौटना चाहती थी। यह एक रोचक बात है। बिसरा हुआ परिवार और उड़ाऊ पुत्र पिता के पास लौटने की लालसा करते हैं। यदि वे पिता के पास लौटने की लालसा न रखें तो वे पिता की सन्तान नहीं हैं। उड़ाऊ पुत्र सूअरों के बाड़े में कभी प्रसन्न नहीं रहा। वह सूअरों के बाड़े के लिए नहीं था। उसमें सूअर का स्वभाव नहीं था। उसमें अपने पिता का स्वभाव था कि उसने अन्त में कहा, “मैं अपने पिता के पास जाऊँगा।” मित्रों, बाड़ा सूअरों को ही अच्छा लगता है। 2 पतरस अध्याय 2 पद 22 में पतरस एक कहानी सुनाता है जिसे मैं उड़ाऊ सूअर का दृष्टान्त कहता हूँ। “नहलाई हुई सूअरनी कीचड़ में लोटने के लिए फिर चली जाती है।” एक छोटा सूअर नहा-धोकर तैयार हो गया और उड़ाऊ पुत्र से कहने लगा, “तुम घर जाने के लिए तैयार दिखाई देते हो। मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।” इस प्रकार वह सूअर उड़ाऊ पुत्र के साथ उसके घर गया परन्तु उसे वहाँ का साफ-सुथरा परिवेश अच्छा नहीं लगा। उसने उड़ाऊ पुत्र से कहा, “हम खाना नीचे डालकर उसमें कूद-कूद कर खाना क्यों न खाएँ। बड़ा मज़ा आएगा? यहां तो बिस्तरे साफ-सुथरे हैं। मुझे तो कीचड़ अच्छा लगता है।” और अन्त में उस छोटे ने कहा, “मैं अपने पिता के घर जाऊँगा।” और आप जानते हैं, उसका पिता कहाँ था? सूअरों के बाड़े में। वह सूअरों के बाड़े में लौट गया। वह वहीं जाएगा। और उड़ाऊ पुत्र अपने घर जाएगा, मित्रों। आप इस पर निर्भर कर सकते हैं। हम उलझन में पड़ जाते हैं जब देखते हैं कि जीवन के मार्ग में उड़ाऊ पुत्र सूअरों के बाड़े में जा रहे हैं और उड़ाऊ सूअर पिता के घर जा रहे हैं, जैसा होना नहीं चाहिए। कभी-कभी वे कलीसिया में आ जाते हैं और समस्याएं खड़ी कर देते हैं। पिता के घर में सूअर के समान वे कलीसिया में उत्पात मचाना आरम्भ कर देते हैं परन्तु अन्ततः वे सूअरों के बाड़े में ही जाएँगे। आप बस प्रतीक्षा करें।

अब इस परिवार को भी स्वदेश लौटना था। अन्त में नाओमी ने निर्णय लिया कि वह यहूदा के बैतलहम लौट जाएगी।

: r 1७ में हम पढ़ते हैं,

“अतः वह अपनी दोनों बहुओं समेत उस स्थान से जहाँ रहती थी निकली, और उन्होंने यहूदा देश को लौट जाने का मार्ग लिया।”

अब नाओमी अपने निर्णय के बारे में अपनी बहुओं से चर्चा करेगी और उन्हें बैतलहम की परिस्थितियों से अवगत कराएगी। मोआबी और इस्राएलियों में परस्पर मेल नहीं था। इस्राएली मोआबियों से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखते थे, जिस प्रकार आगे चलकर वे सामरियों को तुच्छ समझकर दूर रखते थे। नाओमी उन्हें स्पष्ट बताती है कि वे मोआबी होने के कारण बैतलहम में दुःख उठाएँगी, यदि वे उसके साथ गईं। वे वहाँ कभी विवाह नहीं कर पाएँगी। वे अभी युवा स्त्रियाँ ही थीं। वे आजीवन विधवा ही रहेंगी और क्योंकि नाओमी की सम्पदा भी उजड़ गई है इसलिये भोजन व्यवस्था में भी कठिनाई होगी।

: r 1८ में हम पढ़ते हैं,

तब नाओमी ने अपनी दोनों बहुओं से कहा, “तुम अपने अपने मायके लौट जाओ। और जैसे तुम ने उनसे जो मर गए हैं और मुझ से भी प्रीति की है, वैसे ही यहोवा तुम्हारे ऊपर कृपा करे।”

उसने उनकी प्रशंसा की। वे अच्छी बहुएँ रही हैं। एक माँ के लिए यह स्वीकार करना बहुत कठिन होता है कि किसी स्त्री को अपने पुत्र के योग्य समझे। परन्तु यहाँ नाओमी इन परदेशी लड़कियों से कहती है कि वे अच्छी पत्नियाँ थीं। उसने उन्हें प्रोत्साहित किया कि वे अपने माता-पिता के पास लौट जाएँ। उसके साथ बैतलहम न जाएँ क्योंकि वहाँ उनका जीवन दूभर हो जाएगा। वह कहती है,

: r 1९ में हम पढ़ते हैं,

“यहोवा ऐसा करे कि तुम फिर अपने-अपने पति के घर में विश्राम पाओ।” तब उसने उन को चूमा, और वे चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगीं।”

ये वास्तव में नारियों की गोष्ठी है। नाओमी ने उनसे कहा कि यदि वे मोआब में रहीं तो फिर से विवाह करने की सम्भावना है, अपने ही लोगों में उन्हें लड़के मिल जाएँगे परन्तु उसके साथ इस्राएल में यह संभव नहीं होगा। अब ये तीनों स्त्रियाँ मोआब के चौराहे पर खड़ी हैं। जब मैं मोआब का भ्रमण कर रहा था तब मुझे इन तीनों का स्मरण हुआ। उस उजाड़ प्रदेश में घुमाव लेते मार्गों और चौराहों पर आपको इन तीनों स्त्रियों—नाओमी, रूत और ओर्पा का स्मरण आना स्वाभाविक है। वे वहाँ खड़ी रो रही थीं।

: r 1॥10 में हम पढ़ते हैं,

“और उससे कहा, निश्चय हम तेरे संग तेरे लोगों के पास चलेंगी।”

आरम्भ में उनका निर्णय था कि वे नाओमी के साथ उसके देश जाएँगी।

: r 1॥11 में हम पढ़ते हैं,

“नाओमी ने कहा, “हे मेरी बेटियो, लौट जाओ, तुम क्यों मेरे संग चलोगी? क्या मेरी कोख में और पुत्र हैं जो तुम्हारे पति हों?”

देखिए, मूसा की व्यवस्था के अनुसार किसी विवाहित पुरुष की मृत्यु हो जाने पर उसका निकटतम कुटुम्बी उसकी विधवा से विवाह करे। यदि उसका भाई है तो पहले वह विवाह करे। निःसन्देह यह बड़ा ही विचित्र नियम था। रूत की पुस्तक में आगे चलकर हम यह नियम रूत पर लागू देखेंगे। यह कुटुम्बी छुड़ानेहारे की कहानी है। नाओमी अब अपनी बहुओं से मतलब की बात करती है। वह उन्हें स्पष्ट समझाती है, “यदि तुम मेरे साथ चलोगी तो तुम्हारा पुनर्विवाह कभी नहीं होगा क्योंकि मेरे लोग तुम से एकता स्थापित नहीं कर पाएँगे। तुम्हारे साथ समाज से बहिष्कृतों का सा व्यवहार किया जाएगा।”

: r 1॥12 में हम पढ़ते हैं,

“हे मेरी बेटियो, लौटकर चली जाओ, क्योंकि मैं पति करने को बूढ़ी हूँ। और चाहे मैं कहती भी कि मुझे आशा है, और आज की रात मेरे पति होता भी, और मेरे पुत्र भी होते।”

अतः नाओमी ने उनसे आग्रह किया कि वे अपने ही देश में रहें। उसने उनसे स्पष्ट कह दिया कि वह पुत्र जनने योग्य नहीं है और यदि उसके पुत्र उत्पन्न भी हुए तो क्या वे इतने वर्ष प्रतीक्षा कर पाएँगी कि वे बड़े हो जाएँ? तुम क्यों सन्तान प्राप्ति से वंचित होना चाहती हो?

: r 1१13 में हम पढ़ते हैं,

“तौभी क्या तुम उनके सयाने होने तक आशा लगाए ठहरी रहतीं? और उनके निमित्त पति करने से रुकी रहतीं? हे मेरी बेटियो, ऐसा न हो, क्योंकि मेरा दुःख तुम्हारे दुःख से बहुत बढ़कर है; देखो, यहोवा का हाथ मेरे विरुद्ध उठा है।”

आपने देखा है कि परमेश्वर ने नाओमी के परिवार को दण्ड दिया और उसने उन्हें स्पष्ट समझाया कि उन्हें ही दुःख उठाना होगा। इसी कारण वह नहीं चाहती थी कि वे उसके साथ जाएँ।

अब देखिए : r 1१14]

“तब वे फिर से उठीं; और ओर्पा ने तो अपनी सास को चूमा, परन्तु रूत उससे अलग न हुई।”

अब उनके मार्ग अलग-अलग होते हैं। जैसा मैं ने कहा, आप मोआब के किसी भी मार्ग के मोड़ पर आएँगे तो इनका स्मरण हो आएगा। यदि हम उस युग में इन तीनों स्त्रियों को रोते देखते तो ऐसा प्रतीत होता कि कोई विशेष बात नहीं है परन्तु मेरे मित्रों मैं आपको बता देना चाहता हूँ कि यह बहुत महत्वपूर्ण है। उस दिन लिया गया निर्णय निश्चित करेगा कि यीशु का जन्म यहूदा के बैतलहम में हो या न हो। यदि निर्णय उचित न हो तो ज्योतिषियों को कह दो कि वे आने की तैयारी न करें क्योंकि यीशु का जन्म वहाँ नहीं होगा। हमें यह निर्णय साधारण सी बात प्रतीत होगी परन्तु यह एक गंभीर निर्णय था। ओर्पा अपने लोगों में लौट गई जैसा नाओमी ने उसे कहा था।

: r 1१15 में हम पढ़ते हैं,

“तब उसने कहा, देख, तेरी जिठानी तो अपने लोगों और अपने देवता के पास लौट गई है; इसलिए तू अपनी जिठानी के पीछे लौट जा।”

ओर्पा ने घर लौट जाने का निर्णय लिया। परमेश्वर के लिए उसका निर्णय सच्चा नहीं था। वह मूर्तिपूजा में लौट गई। लौटने के साथ-साथ वह धर्मशास्त्र के इतिहास से विलोप होकर अज्ञात वास में चली गई। हम उसके बारे में नहीं सुनेंगे। रूत ने परमेश्वर को चुना। उसका यह निर्णय अनन्तकाल का हो गया। आप उसका नाम नये नियम के पहले अध्याय में भी देखेंगे। वह मसीह की वंशावली में है। नाओमी ने उसकी सत्यनिष्ठा को परखते हुए कहा कि वह अपनी जेठानी के साथ अपने देवताओं के मध्य लौट जाए।

: r 1॥16 में हम पढ़ते हैं,

“रूत बोली, ‘तू मुझ से यह विनती न कर, कि मुझे त्याग या छोड़कर लौट जा; क्योंकि जिधर तू जाए उधर मैं भी जाऊँगी; जहाँ तू टिके वहाँ मैं भी टिकूँगी; तेरे लोग मेरे लोग होंगे, और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा।”

रूत ने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया। यह सातगुना निर्णय है, उसका यह निर्णय परमेश्वर को चुनने का निर्णय था। मित्रों, मेरे विचार में यह एक सच्चा मन फिराव है, यह एक अर्थपूर्ण मन फिराव है, 2 कुरिन्थियों 7:10 पद में यही लिखा है, “क्योंकि परमेश्वर—भक्ति का शोक ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है।” रूत ने यह निर्णय लिया और वह अटल था।